सितम्बर–अक्टूबर 2021

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

# मोरंगा

बाल पत्रिका

# इस बार


**खेल खिलाड़ी**

**5** तीसरी बार

**उड़ान**

**7** मम्मी कितनी सुंदर

**8** मेरी माँ / मेरे घर में देखो कार

**9** नशा ही जीवन का नाश

**10** डर

**11** घास के बदले काम

**12** हम भी पढ़ने जायेंगे

**ज्ञान विज्ञान**

**13** पृथ्वी की परछाई

**जोड़–तोड़**

**16** कितना बड़ा होता है फुट

**कलाकारी**

**20** दीपावली का अनुभव

**बात लै चीत ले**

**23** समझदार बच्चे

**25** माथापच्ची / हीहीही–ठीठीठी

**26** कुछ हमने बढ़ायी, कुछ तुम बढ़ाओ

**शिवानी महावर,** उमंग, श्यामपुरा


**सम्पादन : विष्णु गोपाल**
**सहयोग :** उदय पाठशालाओं के बच्चे व शिक्षक
**डिज़ाइन :** अश्विनी कुमार पंकज
**प्रूफ़ :** सुरेश चंद
**वितरण :** लोकेश राठौर
आवरण चित्र : **पालक मीना**, कक्षा–9, समूह–संगम
**वर्ष 13 अंक 135–136**

मोरंगे' का प्रकाशन यात्रा फाउण्डेशन–आस्ट्रेलिया, आशा फोर एज्यूकेशन, पोर्टिकस–नीदरलेण्ड, व एच.टी. पारेख के सहयोग से हो रहा है।

**प्रबंधन**
शुभम गर्ग
निदेशक,
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

**पत्रिका का पता**
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
रणथम्भौर रोड़, सवाई माधोपुर
(राजस्थान) 322001
फोन : 07462–220957
फेक्स : 07462–220460

# परिचय

**मीनाक्षी**, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

'ग्रामीण शिक्षा केन्द्र' राजस्थान राज्य के सवाई माधोपुर जिले में स्थित एक गैर–सरकारी (निजी) संस्था है। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र का जन्म 1996 में हुआ था और इसका पंजीकरण 'राजस्थान सोसाइटी अधिनियम–1958' के तहत एक संस्था के रूप में किया गया। जी.एस.के. को संस्थागत बनाने का विचार समुदाय की मांग से उभरा ताकि क्षेत्र की आगामी पीढ़ी जीवन में आजीविका जैसी आवश्यक क्षमताओं और जीवन की कठिनाइयों में निष्पक्ष रूप से स्वस्थ निर्णय लेने में सफल रहे। सामूहिक रूप से हमने रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस–पास रहने वाले बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए स्कूल शिक्षा कार्यक्रम शुरू करने के बारे में सोचा।

हमने अपना पहला प्रयास और अपनी पहली स्कूली यात्रा की शुरुआत वर्ष 2004 में गाँव–जगनपुरा (खवा) में बबूल के पेड़ के नीचे से की। गाँवों के बच्चों और समुदाय के सहयोग से उदय सामुदायिक विद्यालय की शुरुआत हुई। गाँव वालों ने अपनी जमीन, फसल, श्रम, समय, पैसा और अपने अनुभव से विद्यालय को आगे

बढ़ाया। इसके पश्चात 2007 में बोदल गाँव में, 2009 में फरिया गाँव में और 2014 में गिरिराजपुरा गाँव में उदय सामुदायिक पाठशाला सफलतापूर्वक शुरुआत की गई। ये तीनों उदय पाठशाला रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान की परिधि पर स्थित है। राष्ट्रीय उद्यान में जानवरों, पक्षियों और सरिसृपों की एक विशाल विविधता शामिल है। जिसमें से बाघ सबसे अधिक प्रचलित है। वन्यजीवन का संबंध इन बच्चों और रहने वाले समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण घटक है, जो इनके रहन–सहन, खान–पान, आजीविका, संस्कृति, रीति–रिवाज, बोली–भाषा और व्यवहार के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। जिसमें इनकी सैंकड़ों पीढियों का ज्ञान, कौशल और अनुभवों का एक विशाल भंडार है। इतने समृद्ध ज्ञान की अनदेखी कर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का दावा करना खोखला साबित होगा। अतः ग्रामीण शिक्षा केन्द्र इनके इसी ज्ञान और परिवेशीय अनुभवों को आधार बनाकर भावी शिक्षा से जोड़ने का प्रयास कर ही रही है।

क्षेत्र में हम पूर्व–प्राथमिक, प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय शिक्षा में काम कर रहे हैं। पिछले वर्षों में 'उदय सामुदायिक पाठशाला' रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस–पास के सीमांत समुदाय और उनके बच्चों के लिए गुणवत्ता शिक्षा के क्षेत्र में जाना माना नाम बन गया है। स्कूलों ने खुद को समुदायों द्वारा स्वीकृत और सराहनीय गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केन्द्रों के रूप में प्रदर्शित किया है। इस मॉडल ने समुदायों को राजकीय विद्यालयों से समान गुणवत्ता की शिक्षा की कल्पना करने और मांगने के लिए प्रोत्साहित किया।

मॉडल को आगे बढ़ाते हुए वर्तमान में हमारे आउटरिच कार्यक्रम – 'विस्तार' को रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आसपास स्थिति गाँवों में वर्ष–2011 में 70 राजकीय विद्यालयों में शुरू किया गया। इसी माध्यम से हम समुदायों, सरकार, शिक्षाविदों, अन्य संगठनों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के पहलुओं को बढ़ावा देने, सीखने और समझने में मदद कर रहे हैं और नई शिक्षा पद्धति की जड़े मजबूत करके उन्हें फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र द्वारा समर्थित उदय पाठशालाओं को शिक्षा में योगदान के लिए राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया जा चुका है। हमारा हर कदम संस्था के विजन और मिशन की तरफ बढ़ रहा है।

इसी कड़ी में एक प्रयास, बच्चों की रचनात्मक, कलात्मक क्षमता और कौशलों को बढ़ावा देने हेतु बाल पत्रिका 'मोरंगे' का सफलतापूर्वक प्रकाषन किया जा रहा है। बाल पत्रिका मोरंगे बच्चों के काम को व्यापक समुदाय तक पहुँचाने और उनसे जुड़ने का मंच प्रदान करती है। हमारे पाठकों और समर्थकों का सहयोग और जुड़ाव हमें लगातार प्रयास करने के लिए प्रेरित करता है।

**धन्यवाद।**

खेल खिलाड़ी

# तीसरी बार

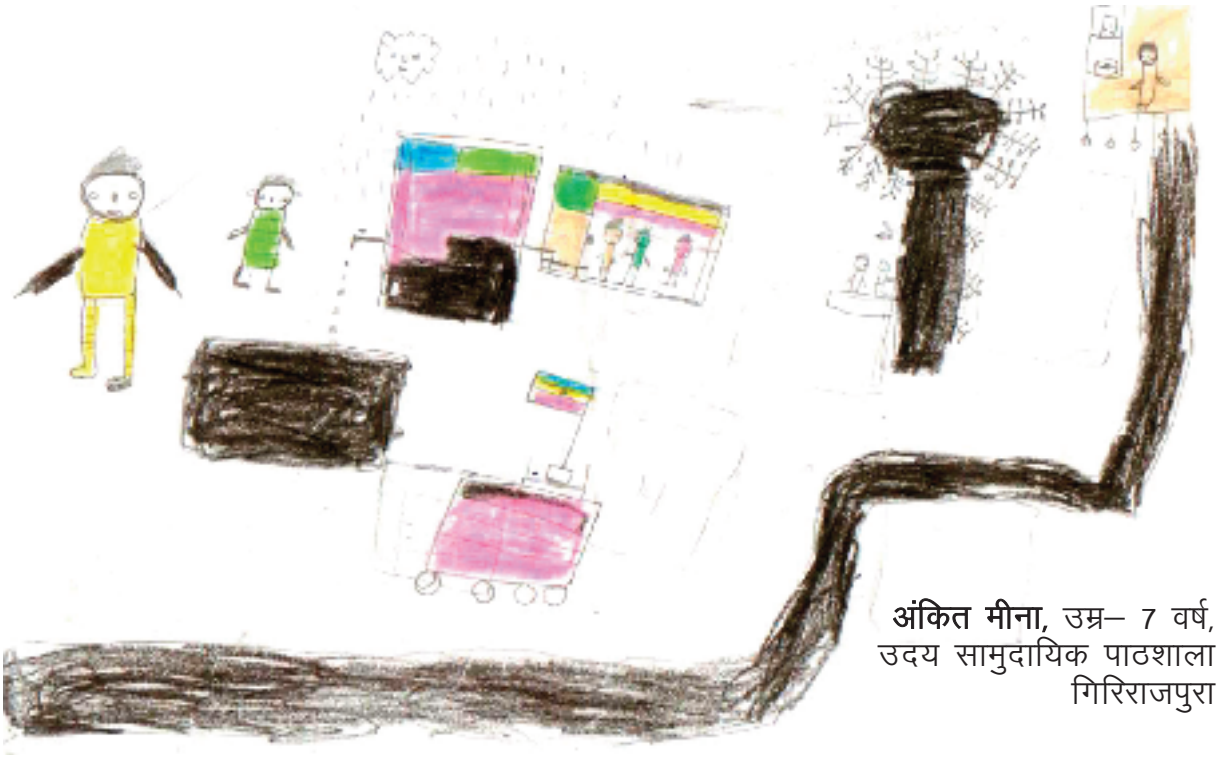

**अंकित मीना,** उम्र– 7 वर्ष,
उदय सामुदायिक पाठशाला
गिरिराजपुरा

एक दिन जब मैं स्कूल गई तो मैंने देखा कि पवन मैदान में साईकिल चला रहा था। मैंने पवन से कहा, ''तुम मुझे साईकिल चलाना सीखा दोगे?''

पवन बोला, ''हाँ मैं तुम्हें साईकिल चलाना सिखा दूंगा।'' उसने मुझे साईकिल पर बैठने को कहा। मैं साईकिल पर बैठ गई और पवन ने पीछे से साईकिल पकड़ ली।

मैंने कहा, ''तुम धक्का दो, मैं चला लूंगी।'' पवन ने साईकिल के धक्का दिया। मैंने जब पैडल दिये तो कभी पैडल उल्टे देती तो कभी मैं सीधे पैडल देती।

मेरी परेशानी देखकर पवन बोला, ''मेरी साईकिल बहुत बड़ी है। तुम इसे नहीं चला सकती। क्योंकि तुम्हारी लम्बाई कम है। तुम्हें छोटी साईकिल चालना सीखना होगा, तब ही तुम बड़ी साईकिल चलाना सीखोगी।'' पवन तो अपनी बात कहकर साईकिल ले गया। अब मैं छोटी साईकिल कहाँ से लाती।

कुछ दिनों बाद वंदना स्कूल में एक साईकिल लाई। मेरा मन फिर से साईकिल सीखने का हुआ। मैंने वंदना से कहा, ''क्या तुम मुझे साईकिल चलाना सिखाओगी?''

वंदना बोली, ''हाँ मैं तुम्हें साईकिल चलाना सिखा दूंगी।''

मैंने कहा, ''मैं साईकिल पर बैठ जाती हूँ और तुम पीछे से साईकिल पकड़

लेना।'' वंदना ने साईकिल पकड़ ली और मैंने पैडल चलाना शुरू किया। मैंने पहली बार पैडल तो दे लिये लेकिन मुझे बैंलेंस बनाना नहीं आया। मुझे साईकिल चलाना थोड़ा – थोड़ा भी नहीं आया।

मेरी परेशानी देखकर वंदना बोली, ''चिन्ता मत करो अब मैं रोजाना साईकिल लाऊंगी। इस तरह मैं तुम्हें साईकिल चलाना सिखा दूंगी।''

अगले दिन जब वंदना साईकिल लाई तो मैंने कहा, ''वंदना तुम पहले मुझे साईकिल चलाना सिखाओ।'' फिर वंदना ने मुझे दोबारा साईकिल चलाना सिखाया। इस बार वंदना ने साईकिल को पीछे से छोड़ दिया। थोड़ी देर तक तो मैंने साईकिल चलाई। इस बीच मैं अपना संतुलन बनाने की कोशिश करती रही। पर मैं थोड़ी देर बाद साईकिल से गिर गई। मुझे थोड़ी चोट भी लगी। उस दिन मैं साईकिल चलाने में असफल रही।

**पलक मीना,** कक्षा–8, समूह–संगम

इसके बाद वंदना अपनी साईकिल नहीं लाई। अब मुझे फिर से किसी के साईकिल लेकर आने का इंतजार है, ताकी मैं अपने तीसरे प्रयास में साईकिल चलाना सीख जाऊँ। कहते है, 'जो काम एक बार में नहीं होता वह तीसरी बार में जरूर हो जाता है।'

**मीनाक्षी**, समूह–हरियाली, उम्र–12 वर्ष

# मम्मी कितनी सुंदर

मेरी मम्मी कितनी सूंदर
रोज खाती है वह लाल चुकन्दर
आधा चुकन्दर मुझे भी देती
आधा चुकन्दर भैया को देती
हमको वह एक बात बताती
चुकन्दर की वह महिमा हमें सुनाती
जो कोई खाता लाल चुकंदर
डर से नहीं छुपता वह घर के अंदर
मेरी मम्मी कितनी सुंदर
रोज खाती है वह लाल चुकंदर।

# मेरे घर में देखो कार

मेरे घर में देखो कार
वह घुमाती हमें बाजार
आज घुमाऊं तुम्हें बाजार
मेरे घर में देखो कार
सबसे सुंदर मेरी कार
पापा को बुलाती मेरी कार
आओ बैठो रामावतार
शीतल को घुमाओ खण्डार
कार हमारी करती प्यार
प्यारी–प्यारी मेरी कार
एक बार आकर देखो मेरी कार

**शीतल**, कक्षा–3

**लक्ष्मी**,
उमंग,
श्यामपुरा

# मेरी माँ

हुआ सवेरा मम्मी बोली
उठ जा मेरी बेटी भोली
मैंने झट से आँखे खोली
उठकर मैंने मुँह को धोया
पवन तो बिस्तर पर था सोया
मुँह धोकर मैंने चाय बनाई
मम्मी को मैंने चाय पिलाई
फिर मैंने निकाला बुहारा
सब तरफ फिर हुआ उजाला
सारा कचरा बाहर निकाला
कचरे को तबली में डाला
फिर मैंने सब्जी और बनाई
सब्जी थी लौकी की भाई
सब्जी बनाकर आटा लगाया
आटा लगाकर चूल्हा जलाया
चून्हे पर मैंने रोटी बनाई
मम्मी देख के खूब हरषाई
पानी भरकर मैं भी लाई
घर पर आकर रोटी खाई।

**उदय फरिया पाठशाला के बच्चे**

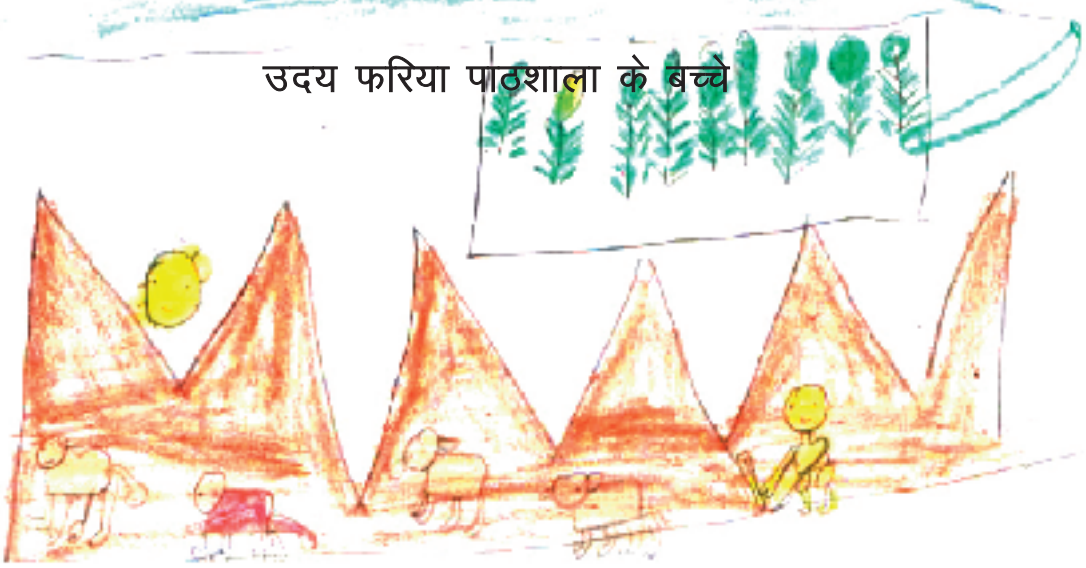

**मूर्ति गुर्जर**, कक्षा–4, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

# नशा ही जीवन का नाश

नशा नशा भई नशा नशा
इसको करने की है मौत सजा
इसके चुंगल में जो भी फसा
मरने से कभी वो ना बचा
नशे से क्या है हमें नुकसान
आओ करा दूं इसका ज्ञान
इसका नुकसान अंदर से होता
इंसान बाद में बैठ के रोता
इंसान तो खाता बनके भोला
अंदर से कर दे यह खोखला
इंसान हो गया इसमें अंधा
करता है क्यों इसका धंधा
बात कहूँ भई मैं खरी खरी
आदत है यह बहुत बुरी
इस कविता से मैंने एक बात कही
नशा तो बिल्कुल सही नहीं।

**उदय फरिया पाठशाला के बच्चे**

**योगिता गुर्जर,**
उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

**अंकिता मीना,**
उम्र–11 वर्ष, समूह–सितारा

**शैलेन्द्र सिंह**, शिक्षक
उदय सामुदायिक
पाठशाला गिरिराजपुरा

# डर

एक जंगल था। उसमें बहुत सारे जानवर रहते थे। वहाँ एक नदी थी। उसमें बहुत सारे मगरमच्छ आते–जाते रहते थे और जानवरों को खा जाते थे। इससे बाकी जानवर डर जाते थे। वे जानवर जंगल छोड़ने की सोचने लगे ताकि बाकि के जानवर बच सके। अब वे सभी जानवर पास के जंगल में रहने लगे।

कुछ दिन बाद वहाँ एक भालू आया और वह भी वहीं रहने लगा। वहाँ खाने के लिए बढ़िया फूल, फल, सब्जी आदि भी थी। यह जंगल उसे भा गया और वह उस जंगल में रहने लगा। अब उसे प्यास लगी तो वह पास की नदी पर पानी पीने गया। वहाँ उसे एक छोटा सा मगरमच्छ दिखा। उसने सोचा शायद यहाँ मगरमच्छ रहता है और वह पानी पीने गया और पानी पीकर वहाँ से भाग जाता है।

भालू मगरमच्छ को भगाने का उपाय सोचता है कि मैं इसे कहूंगा कि यहाँ एक भूत रहता है, वो तुम्हें खा सकता है। फिर वह रात में भूत बनकर आ जाता है और मगरमच्छ को डराता है। मगरमच्छ सोचता है कि यहा तो सच में भूत है और वह अपने साथियों को लेकर वहाँ से भाग जाता है। भालू जंगल में खुशी से रहने लगा।

**राज,** समूह–तिरंगा, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

# घास के बदले काम

एक जंगल था। उस जंगल में एक बूढा हाथी रहता था। उसका घर एक तालाब के पास था। इसलिए वह जंगल में घूम भी नहीं पाता था। वह उस तालाब के पास उगी हुई घांस खाने लगा। एक साल जंगल में बरसात नहीं हुई तो जंगल का सारा घांस सूख गया। सारे जानवर दूसरे जंगल में जाकर घास व फल खा आते थे। लेकिन हाथी नहीं जा सकता था तो हाथी ने एक योजना बनाई। सभी जानवर तालाब में पानी पीने आये तो हाथी ने सारे जानवरों को पानी पीने के बाद रोका और कहा कि मेरे लिए तुम सभी जानवर थोड़ा–थोड़ा घास ले आया करो और पानी भी पी जाया करो। क्योंकि अब मैं बूढा हो गया हूँ और मुझसे इतनी दूर तक चला भी नहीं जाता है। सारे जानवर हाथी की बात मान गये क्योंकि हाथी पहले उन सभी की मदद करता था और अब सारे जानवर हाथी की मदद कर रहे हैं। हाथी के साथ जानवर भी तालाब के पास रहने लगे थे। अब तालाब ही सब की प्यास बुझा रहा था। हाथी को तालाब की रखवाली करने और पानी को बचाने की जिम्मेदारी दी गई। इससे जानवर खुश रहते थे।

**सफेदी**, उम्र–11 वर्ष, समूह–सागर

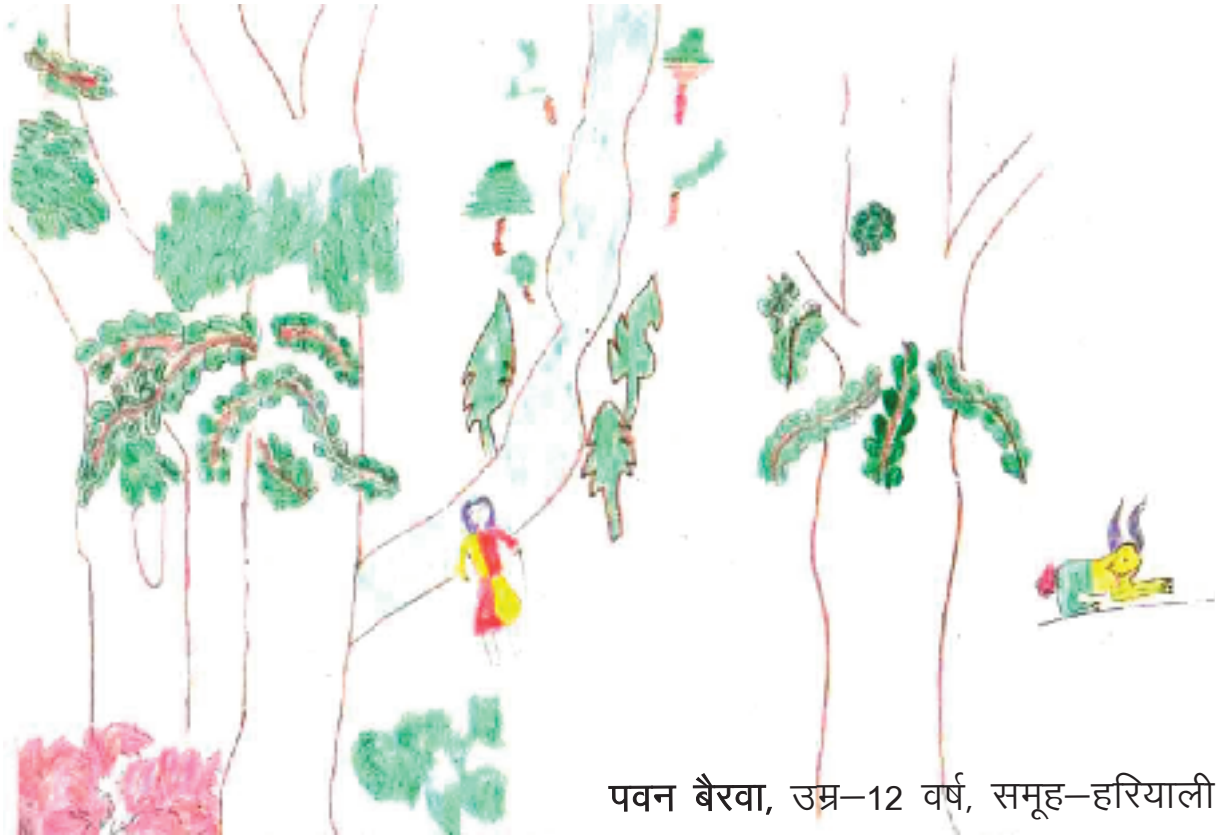

**पवन बैरवा**, उम्र–12 वर्ष, समूह–हरियाली

**मीनाक्षी बैरवा,**
उम्र–13 वर्ष,
समूह–हरियाली

# हम भी पढ़ने जायेंगे

हमारे घर पर पानी की व्यवस्था नहीं थी तो हम सब एक टंकी पर पानी लेने जाते थे। टंकी के पास एक मकान था। उस मकान में पहले गुरूजी रहते थे। गुरूजी लॉकडाऊन में उस मकान में ही पढ़ाने लगे थे।

हम रोज उस टंकी पर पानी भरने जाते तो रोज हम वहाँ पर पन्द्रह–बीस बच्चों को पढ़ाते हुए देखते थे। हमारा भी मन पढ़ने को करता था। सोचते हम भी पढ़ने आयेंगे। फिर हमने हमारे मम्मी–पापा से कहा कि हम भी टंकी पर पढ़ने जायेंगे। हम बस इस बात की जिद करके बैठ गये। तब हमारे मम्मी–पापा बोले कि ठीक है, हम गुरूजी से बात करेंगे।

हमारे पापा ने जब गुरूजी से बात की तो हमारे पापा को गुरूजी बहुत अच्छे लगे। मेरे पापा से गुरूजी ने अच्छे से बात की। गुरूजी से मेरे पापा ने कहा, ''फिर कल मैं अपने बच्चों को भेज दूं?''

गुरूजी बोले, ''कल भेज देना। परन्तु दो–तीन दिन बाद अनुदान राशि भी दे देना।''

मेरे पापा ने साथ में ही अनुदान राशि दे दी। फिर हम रोज पढ़ने आने लगे। हमारे गोविन्द गुरूजी बहुत अच्छे से पढ़ाते थे। ऐसे ही हम रोज पढ़ने आने लगे। हम साथ में खेलने लगे और हमें बहुत अच्छा लगा कि हम यहाँ रोज पढ़ने आते हैं।

**सोनिया गुर्जर**, समूह–सितारा, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

# पृथ्वी की परछाई

कभी–कभी अचानक चन्द्रमा का चमकना बंद हो जाता था। तब एक काली परछाई चंद्रमा को ढंक लेती है और फिर एक हल्की लाल रोशनी ही दिखाई देती है। कुछ देर बाद यह परछाई हट जाती और दुबारा से चंद्रमा चमकने लगता था। इस घटना को चंद्र–ग्रहण कहते हैं। पुराने जमाने में चंद्र–ग्रहण से लोग बुरी तरह घबरा जाते थे। उन्हे लगता था कि ग्रहण से चंद्रमा का प्रकाश सदा के लिए छिन जायेगा। फिर रात में चंद्रमा के प्रकाश के अभाव में उन्हे बहुत परेशानी होगी। पर आकाश का गहरा अध्ययन करने वालों को ऐसा नहीं लगता था। उन्होने पाया कि चन्द्रग्रहण हमेशा पूर्णमासी के समय ही होता था। चंद्रगहण अन्य किसी समय नहीं होता था। एक और खास बात थी। चंद्रग्रहण किसी विशेष पूर्णमासी पर ही होता था।

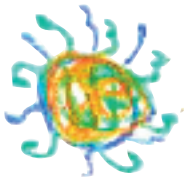

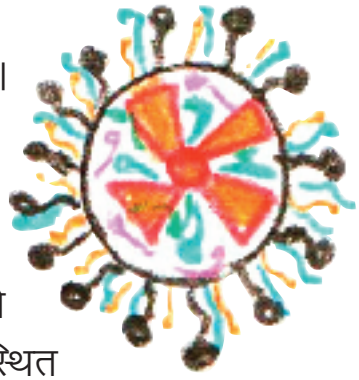

चंद्रमुखी सैनी,
उम्र–10 वर्ष,
समूह–सितारा

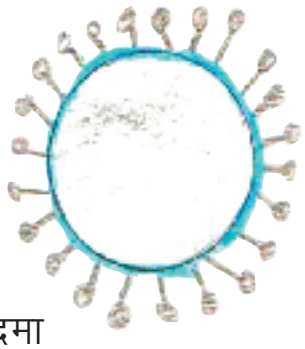

प्राचीन यूनानियों ने आकाश का गहरा अध्ययन किया था। उन्होने पूर्णमासी पर, पृथ्वी के एक ओर चंद्रमा और दूसरी ओर सूर्य को स्थित पाया था। इस स्थिति में सूर्य का प्रकाश पृथ्वी से गुजरता हुआ चंद्रमा पर पड़ता था। जब सूर्य का प्रकाश पूरे चंद्रमा पर पड़ता तो यूनानियों को चंद्रमा का पूरा गोला चमकता हुआ दिखाई देता। अगर पृथ्वी, चंद्रमा और सूर्य के बिल्कुल मध्य में स्थित होती तो सूर्य के प्रकाश को चंद्रमा तक पहुंचने के लिए पृथ्वी से होकर गुजरना पड़ता। ऐसी हालत में सूर्य की रोशनी पृथ्वी से टकराती और इस कारण चंद्रमा तक सूर्य का प्रकाश नहीं पहुंच पाता। इसे चंद्रमा पर पृथ्वी की परछाई पड़ना भी माना जा सकता था। ग्रहण के दौरान, पृथ्वी की परछाई चंद्रमा पर पड़ती और उससे चंद्रमा काला नजर आता। कभी–कभी पूर्णमासी के दौरान, चंद्रमा और सूर्य के बिल्कुल मध्य में पृथ्वी स्थित होती थी। और उस समय ही चंद्रग्रहण होता था।

**सपना**, उमंग, श्यामपुरा

पृथ्वी की चंद्रमा पर पड़ी परछाई से भी हम पृथ्वी के आकार के बारे में कुछ जानकारी प्राप्त कर सकते थे। चंद्रमा पर पृथ्वी की परछाई की किनार हमेशा वक्राकार होती और देखने में एक गोल का हिस्सा नजर आती थी। यूनानियों ने आकाश के अलग–अलग भागों में घटे चंद्रग्रहणों का अध्ययन किया। उन्होने अनेकों चंद्रग्रहण देखे। कुछ में चंद्रमा आकाश में उपर, कुछ में नीचे था। कुछ में चंद्रमा क्षितिज पर था। पर चंद्रमा की आकाश में स्थिति के बावजूद उस पर पड़ी पृथ्वी की परछाई हमेशा किसी गोलाकार आकृती जैसी नजर आती थी। इससे एक बात स्पष्ट हुई। पृथ्वी की परछाई हमेशा गोलाकार होती थी। एक ही ऐसी आकृती थी जिससे ऐसा होना संभव था। वो आकृती गोल–गेंद जैसी।

ईसा से 450 वर्ष पूर्व, यूनानी दार्शनिक फिलोलेयस, दक्षिणी इटली के पास रहते थे। प्रमाणों के आधार पर फिलोलेयस ने अपना पक्का मन बनाया – पृथ्वी का आकार गेंद जैसा था। फिलोलेयस ने बहुत से प्रमाण जुटाए। तारों की स्थिति में बदलाव, तट से दूर जाते जहाजों का समुद्र में लुप्त होना और चंद्र–ग्रहण के दौरान पृथ्वी की परछाई जैसे प्रमाणों से फिलोलेयस एक निष्कर्ष पर पहुंचे – पृथ्वी गेंद जैसी थी और वो आकाश की बहुत बड़ी गेंद के बीच में स्थित थी।

जहां तक हम जानते हैं फिलोलेयस पहले इंसान थे जिन्होने पृथ्वी के गोल होने का दावा किया था। पर अभी भी एक प्रश्न बाकी था। अगर पृथ्वी गेंद जैसी थी और हम सभी उसकी सतह पर रह रहे थे तो फिर हम उस पर से नीचे की ओर फिसलते क्यों नहीं थे? समुद्र का पानी भी फिसल कर नीचे की ओर क्यों नही गिरता था? लोगों  के अनुभव के अनुसार चीजें हमेशा नीचे की ओर ही गिरती थी। अगर हम किसी चीज को उंचाई से छोड़े तो वो नीचे को ही गिरेगी। पर यहां नीचें का क्या मतलब होगा? अगर पृथ्वी गोल गेंद जैसी थी तो नीचे गिरने वाली हर वस्तु पृथ्वी के केन्द्र की ओर गिरती। यह बात पृथ्वी पर खड़े हर इंसान, चाहे वो कहीं भी क्यों न हो उनके लिए सच थी। वो इंसान, पृथ्वी पर किसी जगह, उसके बिल्कुल विपरीत स्थान, या और कहीं बीच में हो सकता था। स्थिति के बावजूद वो इसान और उसके आस–पास की सभी चीजें पृथ्वी के केंद्र की ओर आकर्षित होती। वो इंसान जहां भी खडा होता, पृथ्वी का केंद्र हमेंशा उसके पैरों की दिशा में होता – इससे उसका सिर उपर और पैर नीचे की ओर होते। ईसा से 350 साल पहले, यूनानी दार्शनिक अरस्तू ने इस बात को स्पष्ट रूप से व्यक्त किया था। अरस्तु की कल्पना के अनुसार हर वस्तु पृथ्वी के केंद्र की ओर आकर्षित होती थी। इसका मतलब बिलकुल साफ था। पृथ्वी का आकार गेंदनुमा होना जरूरी था।

**स्रोत–विष्णु गोपाल**

**महेन्द्र चौधरी,** कक्षा–7, राजकीय विद्यालय सांवलपुर

**महेन्द्र गुर्जर,** समूह–सागर,
उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

# कितना बड़ा होता है फुट?

पुराने जमाने में एक राजा रहता था और साथ में उसकी पत्नी, यानी रानी भी। राजा–रानी काफी खुश थे, क्योंकि उनके पास दुनिया की सभी चीजें थी। परन्तु जब रानी का जन्मदिन आया तो राजा के सामने भारी समस्या खड़ी हो गई। रानी – जिसके पास सब कुछ था, उसे वो क्या भेंट करे?

राजा ने सोचा, और सोचा, और अंत में उसके दिमाग में एक विचार आया। वो रानी को एक पलंग भेट करेगा। रानी के पास कोई पलंग न था, क्योंकि तब तक पलंगों का आविष्कार ही नहीं हुआ था। इसलिए रानी – जिसके पास दुनिया की सभी चीजें थी– उसके पास भी पलंग नहीं था।

फिर राजा ने प्रधानमंत्री को बुलाया और उसे पलंग बनवाने का आदेश दिया। प्रधानमंत्री ने उस्ताद बढ़ई को बुलाया और उसे पलंग बनवाने का आदेश दिया। उस्ताद बढ़ई ने अपने शागिर्द को बुलवाया और उसे पलंग बनवाने का आदेश दिया।

''पलंग कितना बड़ा होता है?'' शागिर्द ने पूछा। क्योंकि उस समय तक किसी ने पलंग देखा ही न था, इसलिए किसी को पलंग की नाप का अंदाजा भी न था।

''पलंग कितना बड़ा होता है?'' बढ़ई ने प्रधानमंत्री से पूछा।

''अच्छा प्रश्न है,'' प्रधानमंत्री ने जवाब दिया। फिर प्रधानमंत्री ने राजा से पूछा, ''पलंग कितना बड़ा होता है?''

राजा ने सोचा और सोचा, और सोचा। अंत में उनके दिमाग में एक अच्छा विचार आया। पलंग इतना बड़ा हो जिससे रानी उस पर आराम से लेट सके।

राजा ने रानी को बुलवाया। उसने रानी से नए कपड़े पहन कर फर्श पर लेटने को कहा। फिर राजा ने अपने जूते उतारे और नंगे पैरों से उसने रानी के चारों ओर चक्कर काटा। राजा ने गिना। पलंग की नाप 6 फिट लंबा और 3 फिट चौड़ा होना चाहिए। तभी रानी उस पर आराम से लेट पाएगी। इसमें रानी के मुकुट की नाप भी शामिल थी, जिसे वो कभी कभी सोते समय पहनती थी। उसके बाद राजा ने रानी का शुक्रिया अदा किया। फिर राजा ने प्रधानमंत्री को पलंग की नाप बतायी।

प्रधानमंत्री ने उस्ताद बढ़ई को पलंग की नाप बतायी।

शागिर्द ने अपने उस्ताद का शुक्रिया अदा किया और फिर अपने जूते उतारे। फिर उसने अपने छोटे पैरों से नापा– तीन फिट चौड़ा और छः फिट लंबा फिर शार्गिद ने रानी के लिए पलंग बनाया।

पहली निगाह में पलंग राजा को बहुत सुंदर लगा। वो रानी का जन्मदिन आने का इंतजार नहीं कर पाया। राजा ने रानी को तुंरत बुलाया और रानी से नए कपड़े पहनने को कहा। फिर राजा नया पलंग लाया और उसने रानी से पलंग पर लेटने को कहा। परंतु पलंग रानी की नाप से बहुत छोटा निकला।

यह देख राजा को बहुत गुस्सा आया और उसने तुरंत प्रधानमंत्री को बुलाया। प्रधानमंत्री ने फोरन उस्ताद बढ़ई को बुलाया। बढ़ई ने तुरंत दरोगा को बुलाया जिसने फोरन शागिर्द को जेल में डाल दिया।

इससे शागिर्द काफी दुखी हुआ। मैंने तो पलंग ठीक नाप का बनाया था। फिर वो रानी के लिए छोटा क्यों पड़ा?

शागिर्द ने सोचा, और सोचा, और सोचा। अंत में उसके दिमाग में एक बात आई। जो पलंग राजा के तीन पैरों की चौड़ाई और छह पैरों की लंबाई की नाप का होगा, वो निश्चित ही शागिर्द के तीन पैरों की चौड़ाई और छह पैरों की लंबाई की नाप के पलंग से बड़ा होगा।

''अगर मुझे राजा के पैरों की नाप पता चल जाए तो मैं जरूर रानी की नाप का सही पलंग बना पाऊंगा,'' वो चिल्लाया।

शागिर्द ने ये बात दरोगा को समझाई। दरोगा ने यह बात उस्ताद को समझाई। उस्ताद ने यह बात प्रधानमंत्री को समझाई। प्रधानमंत्री ने यह बात राजा को समझाई।

राजा बहुत व्यस्त था। उसे जेल जाने का समय न था। राजा ने अपना एक

**गौरव गुर्जर,** कक्षा–4, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

जूता निकाला। फिर उसने एक मशहूर शिल्पकार को बुलाया। शिल्पकार ने राजा के जूते जैसा हूबहू एक संगमरमर का जूता बनाया। इस जूते को जेल भेजा गया।

शागिर्द ने राजा के संगमरमर के जूते से नापना शुरू किया– तीन फिट चौड़ा और छह फीट लंबा। और इस प्रकार रानी के लिए सही नाप का पलंग बनाया।

इधर पलंग तैयार हुआ और उधर रानी का जन्मदिन आ गया। राजा ने रानी को बुलाया और रानी से नए कपड़े पहनने को कहा। फिर राजा ने नया पलंग निकाला और रानी से उस पर लेटने को कहा। रानी पलंग पर लेटी और ...

पलंग एकदम रानी की सही नाप का निकला। इसमें रानी के मुकुट की नाप भी शामिल थी, जिसे वो कभी–कभी सोते समय पहनती थी। यह वाकई रानी को मिला सबसे बेहतरीन तोहफा था।

राजा बहुत खुश हुआ। उसने झट से बढ़ई के शागिर्द को जेल से बुलाया और उसे राजकुमार बना दिया। राजा ने बड़े जलसे का आदेश दिया। जलसे में बहुत लोगों ने भाग लिया और छोटे शागिर्द की प्रशंसा की।

उसके बाद से जब किसी को कोई चीज नापनी होती तो वो हमेशा राजा के जूते का ही इस्तेमाल करता। और जब कभी कोई कहता, ''मेरा पलंग छह फीट लंबा और तीन फीट चौड़ा है'' तो सभी लोग पलंग की सही नाप को झट से समझ जाते।

**रौल्फ मॉइलर**

**कृष्णा**, उदय सामुदायिक पाठशाला फरिया

कलाकारी

**सपना**, उमंग, श्यामपुरा

# दीपावली का अनुभव

दीपावली हमारे देश में मनाया जाने वाला सबसे बड़ा त्यौहार है। दीपावली की शुरूआत घरों की साफ–सफाई से होती है। सभी औरतों ने अपने–अपने घरों की साफ–सफाई करती तथा जिनके घर कच्चे होते थे उनको लीप कर उन पर मांडने भी मांडे जाते। सभी ने अपने घरों को खूब अच्छे से साजाया। घरों की तरह रास्तों और बाजारों को भी सजाया जाता है।

दीपावली से पूर्व धनतेरस मनाई जाती है। इस दिन सभी लोग अपने घरों के लिए नये बर्तन व कई नई वस्तुयें बाजार से खरीद कर लाते है। यह कहते हैं कि धन तेरस के दिन जो भी वस्तु खरीदते हैं व बहुत लाभकारी और अच्छी रहती है।

दीपावली के दिन हम सभी ने नये कपड़े पहने और घरों में अच्छे पकवान भी बनाये। इस दिन हम सभी ने बड़ों का आर्शीवाद भी लिया। हम शाम के समय एक–दूसरे के घरों में दीपक रखने के लिए गये तथा इसके बाद लक्ष्मी जी का पूजन किया। इसके बाद हमने गाय–भैंस की भी पूजा की। दीपावली पर हम सबने पटाखें, फूलझड़ी, चकरी, रॉकेट आदि चलाये। फिर हम खाना खाकर सो गये।

दीपावली के दूसरे दिन हमने गोवर्धन की पूजा करने के लिए गोवर्धन बनाने लगे तो बरसात आ गई। अब गोवर्धन तो गीले गोबर से ही बना था तो गीला होकर बहने लगा। जिसके कारण गोवर्धन सही नहीं बना। फिर सभी ने छतरी लेकर गोवर्धन की पूजा की। पूजा के लिए यों तो कुछ भी बनाओं पर दीपावली की मिठाई खाने के बाद मीठे से सब ऊब जाते है। जिसके कारण मंदिरों में बनने वाले कड़ी बाजरा सभी को बड़ा भाता है। शाम को गोबर्धन पूजा में घरों में चूरमा बनाया जाता है। इस दिन दीपावली से भी ज्यादा पटाखे चलाए जाते है।

अगला दिन भाई दूज का होता है। जिसमें शादी–शुदा महिलाएं अपने भाई के घर जाती है। जो नहीं जा पाती वो अपने भाई–भतीजों को अपने ससुराल में ही बुला लेती है। इस तरह एक बार फिर कुछ खास बनाने, खाने–खिलाने का माहौल बन जाता है। नये लोगों के घर आने जाने से अलग माहौल बन जात हैं। बहनों को उपहार में कपड़े मिलते है। दूज के बाद सभी अपने अपने घर लौट जाते है। और अपने अपने कामों में लग जाते हैं। हमारे भी स्कूल खुल जाते है। तो हम भी अपने अनुभवों को मित्रों के साझा करने के लिए स्कूल को चल देते है।

**मनीषा सैनी,** उम्र–13 वर्ष, समूह–उजाला

**प्रिंस मीना**, उम्र–11 वर्ष, समूह–झरना

उर्मिला, उमंग, श्यामपुरा

# समझदार बच्चे

**अंकिता मीना**
उम्र–11 वर्ष,
समूह–सितारा

मेरा नाम मनीषा सैन है। मैं कक्षा 8 में पढ़ती हूँ। मैं आपको मेरी सहेलियों के बारे में बताना चाहती हूँ। अगर मुझे लिखने या मात्राओं में कोई गलती हो जाए तो मुझे माफ करना।

हमारे सितारा समूह में दो कक्षायें बैठती हैं। हम कक्षा 7 व 8 में कुल 20 लड़कियाँ हैं और 7 लड़के हैं। यानी कुल 27 बच्चे हैं। हम दस लड़कियाँ बिल्कुल बहनों की तरह रहते हैं। जब भी हम दसों में से किसी एक को मुसीबत आती है तो सारी लड़कियाँ मिलकर उस मुश्किल का हल निक. ालते थे। ऐसे ही हम जब भी खेलने जाते थे तो एक–दूसरे की गलतियाँ निकालते थे। फिर दूसरे दिन उन गलतियों को सुधारते थे। जब हम लाइब्रेरी में किताबें पढ़ने जाते तब भी हम एक–दूसरे की गलतियाँ निकालकर सुधारते थे। जो अक्षर हममे से किसी एक को नहीं आता तो हम आपस में बता देते थे। या फिर जो शब्द हम दसों को नहीं आता था तो हम सब गुरूजी के पास जाकर उनसे पूछते। फिर उस शब्द को बार–बार पढ़कर याद करते थे। क्योंकि ऐसा करने से हमें वो शब्द याद हो जाता था।

कभी भी एक दूसरे से कोई बात नहीं छिपाते थे। और ना ही कभी एक दूसरे से झूठ बोलते थे। हमारे परिवार वाले भी ये सब करते थें। अगर कोई बच्चा काम नही कर रहा होता है तो उसे प्यार से समझाते थे। दूसरों की तरह डांटना या पीटना नहीं करते थे। यह देखकर हमारे गुरूजी बहुत खुश होते थे। और बार–बार एक

ही बात कहते थे कि हमेशा इसी तरह सभी मिलकर साथ रहा करो।

हमारे माता–पिता इतने अच्छे हैं कि जिसकी कोई सीमा नहीं। और हाँ एक बात और बच्चे अपने माता–पिता से ही तो ये सब सीखते है। अगर गाली सुनेगे तो बच्चे भी उस तरह ही गाली निकालेंगे। पर हम सब ऐसे नहीं है। हम तो बहुत अच्छे है। हम सभी का पढ़ाई में भी बहुत ध्यान है। एक दिन जब हमारे गुरूजी हमारे घर संपर्क करने गये तो हमारे पापा को हमारे गुरूजी ने सारी बातें बता दी और गुरूजी की बात सुनकर माता–पिता बहुत खुश हुए। जब मैं स्कूल से घर आई तो मैंने देखा कि मेरे मम्मी–पापा बहुत खुश थे। मैंने जाकर मेरे पापा से पूछा कि आप इतने खुश क्यों हैं क्या बात है हमें तो बताइये। मेरे पापा ने मुझे गले लगा लिया और मेरे पापा की आँखों में आंसू आ गये और मुझे सारी बातें बता दी। फिर कहने लगे कि मुझे नहीं मालूम कि आज तू इतनी समझदार हो गई है। मैं तो तुम्हें अभी छोटी बच्ची ही समझता था और अब से तुम रोज स्कूल जाना और अच्छे से पढ़ाई करना और ऐसे ही अपने दोस्तों का साथ देना। सबसे अच्छी बातें किया कर और फिर ये सब सुनकर मेरी आँखों में आंसू आ गये। उस दिन से हम बहुत खुश रहने लगे और मैं भी दोस्तों के साथ भी बहुत खुश रहने लगी।

**मनीषा सैनी,** उम्र–13 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

**कोमल बैरवा**, उम्र–12 वर्ष,
समूह–हरियाली

# माथापच्ची

1. चार मीटर लम्बाई के चार बासों के चार–चार टुकड़े करने के लिए कुल कितनी बार काटना होगा?
2. ऐसी कौनसी सब्जी है जिसमें ताला और चाबी आते हैं।
3. पांच अक्षर का मेरा नाम, उल्टा सीधा एक समान।
4. कौआ आकाश में उड़ता है, मगर रहता कहाँ है।
5. एक लाठी की सुनो कहानी, जिसमें भरा है मीठा पानी।

**कोमल बैरवा**, उम्र–12 वर्ष, समूह–हरियाली

# हीहीही ठीठीठी

1. पापा – चिंटू, आज तुम स्कूल क्यों नहीं जा रहे हो?
   चिंटू – पापा, कल स्कूल में हमें तोला गया था और क्या पता आज बेच ही न दें।

2. मास्टर जी – बताओ, कुतुब मीनार कहां है?
   चिंटू – पता नहीं।
   मास्टर जी – फिर बेंच पर खड़े हो जाओ।
   चिंटू बेंच पर खड़ा हो जाता है और कुछ देर बाद कहता है, मास्टर जी यहां से भी नहीं दिख रहा है।

# कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ
# बात में जोड़ो बात, गीत में कड़ी लगाओ

भूमिका मीना,
उम्र–9 वर्ष, समूह–संगम

नानी ने शुरू की कहानी
थोड़ी नई थोड़ी पुरानी ....

गोविन्द नायक,
उम्र–11 वर्ष, समूह–सूरज
द्वारा शुरू की गई
इस कविता को पूरा करके
मोरंगे को भेजें।

---

एक बार हम रणथम्भौर के जंगल में गये, वहाँ हमारे रास्ते में एक शेर आ गया। शेर के डर से हमारी बस बंद हो गई। बड़े अजय ने छोटे अजय से बोला कि वह देखो 'टाईगर'। टाईगर को देखते ही हमारे रोंगटे खड़े हो गए। टाईगर बस की तरफ बढ़ने लगा। मैं डर से चिल्लाना चाहता था पर मेरी आवाज ही नहीं निकल रही थी.....

गोविन्द नायक, कक्षा–4, समूह–सूरज द्वारा
शुरू की गई कहानी को पूरा करके मोरंगे को भेजें।

**महेन्द्र,** कक्षा–7,
राजकीय विद्यालय सांवलपुर

## पहेलियों के ज़वाब –

1. 12 बार  2. लोकी  3. मलयलम  4. पानी में  5. गन्ना